शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

शान्ति मन्दिर
Temple of Peace

© Shanti Mandir अक्टूबर २०१२, संस्करण १०

सत्सङ्ग की विशेषता यही होती है कि बड़ों के पीछे छोटे-छोटे भी लग जाते हैं ।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्धमार्ग ई-पत्रिका का अक्टूबर २०१२ अंक प्रस्तुत है । कुछ समय से किसी कारणवश आपको यह विलम्ब से प्राप्त हो रही है, इसके लिए क्षमा चाहते हैं । इस त्रुटि को शीघ्र सुधारने में प्रयास रत हैं । प्रस्तुत हैं श्री गुरुदेव द्वारा कुछ समय पूर्व बनूड़ (पंजाब) में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश ।

श्रीगुरुदेव का प्रवचन

सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत, और शान्ति मन्दिर का पंजाबी विच परिचय देने के लिए रवि का आभार । और हमारे डॉ.सुधा रानी जी और उनकी बहिनें, कौशल्या जी भी हमारे लुधियाना से पधार गयीं हैं, तो सब आये हैं, प्रमोद जी परशुराम जी भी और हमारे डॉ. रामपाल ने कहा कि आज राहुल भी यहाँ आया है और जब सत्सङ्ग होता है बहुत सेवा करता है। सत्सङ्ग की विशेषता यही होती है कि बड़ों के पीछे छोटे-छोटे भी लग जाते हैं । हम तो करते चलते हैं परन्तु हमारा जीवन ऐसा हो, हमारे

सत्सङ्ग में हमारा आचरण ऐसा हो कि जो हमारे नवयुवक हैं, जो छोटे हैं, उनको भी अपने आपसे मन में रुचि लगे कि हम भी सत्सङ्ग करें।

सत्सङ्ग का आचरण ऐसा हो कि जो हमारे नवयुवक हैं, जो छोटे हैं, उनको भी अपने आपसे मन में रुचि लगे कि हम भी सत्सङ्ग करें। क्योंकि युवावस्था में मन ऐसा सोचता है कि सत्सङ्ग तो बड़े लोग करें, सत्सङ्ग तो दादा जी करें, उनके पीछे नानीजी, दादीजी जायें और हम कभी-कभी उनके साथ प्रसाद लेने चल देते हैं कि सत्सङ्ग में प्रसाद मिल जाय तो बस हो गया, परन्तु वास्तविक प्रसाद कहा जाता है समझ है, ज्ञान है, बुद्धि है, और बाकी जो प्रसाद है वो तो हम सब को लालच दिलाने के लिए कि हम जायें तो क्यों जायें। हमारे विनीत और ममता जी आये हैं, वो और उनका एक बच्चा अमरीका रहते हैं। उनका बेटा जब पहली बार आया था, तब मेरे पास यहाँ मिश्री या मिठाई कुछ पड़ा था तो उस दिन तो उसको मैंने कुछ दे दिया, परन्तु दूसरी बार जब आया तो उसकी नजर वहीं पड़े तो मुझे पहले समझ नहीं आया ये बच्चा यहाँ क्यों देखता है,कि यहाँ क्या है,फिर मुझे ख्याल आया कि पिछली बार जब आया था तो मैने उसे प्रसाद दिया था जो यहाँ पड़ा था, तो वह दुबारा यही सोच कर आया कि जब स्वामीजी के पास जाऊँगा तो प्रसाद मुझे मिलेगा। और वो वहाँ से जा ही नहीं रहा था, तो फिर मुझे याद आया कि जब तक मैं इसे प्रसाद नहीं दूँगा तब तक ये जायगा नहीं। तो ऐसे हमारे बाबाजी बोलते थे कि कारण कुछ भी हो, जब हम सद्गुरु के पास पहुँच जाते हैं, वहाँ पहुँचने पर हमको समझ आ जाए ज्ञान हो जाए कि ‘ सतगुरु मिले मोरे सारे दुःख बिसरे अन्तर के पट खुल गयो रे’। कि सद्गुरु की ऐसी कृपा आशीर्वाद हम सब के जीवन पर हो जाए, तो अन्तर से ज्ञान जागरित हो

कभी कभी हमें लगता है कि जिसके पास बहुत धन है, वह मस्त है, उसके पास कोई चिन्ता नहीं, कोई समस्या नहीं । वास्तव में जिसके पास कुछ नहीं, उसके पास चिन्ता नहीं, क्योंकि चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है ।

जाता है । जीवन में दुःख और कष्ट सभी को है, चाहे वो गरीब हो, चाहे अमीर हो, चाहे किस भी तरह का व्यक्ति हो, सभी के पास किसी ना किसी का दुःख होता ही है । लोगों से मैं कहता हूँ कि सौ रुपये वाले को सौ रुपये का दुःख होता है, मतलब उसकी चिन्ता सौ रुपये की होती है, हजार वाले को हजार रुपये की चिन्ता होती है, लाख वाले को लाख की चिन्ता होती है, करोड़ वाले को करोड़ की चिन्ता होती है, तो सब को अपनी-अपनी चिन्ता होती है, वो यही सोचता है कि मैं इस को कैसे बचा के रखूँ, इसको कैसे बना के रखूँ, कैसे बनाऊँ, कैसे बढ़ाऊँ । कभी कभी हमें लगता है कि जिसके पास बहुत धन है, वह मस्त है, उसके पास कोई चिन्ता नहीं, कोई समस्या नहीं । वास्तव में जिसके पास कुछ नहीं, उसके पास चिन्ता नहीं, क्योंकि चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है । जिसके पास बहुत है उसको सदैव चिन्ता रहती है कि ये कहीं चले न जायें, इसकी चोरी न हो जाये, ये मेरे द्वारा कहीं खत्म न हो जायें, इत्यादि, इत्यादि । इस के लिए आप देखोगे कि सन्त जन फकीर जैसे रहते हैं, कुछ अपने पास रखते नहीं क्योंकि वो यही सोचते हैं कि यही सब चिन्ता के कारण हैं । बाबा जी कहा करते थे कि महाराष्ट्र में एक सन्त हुआ करते थे, दिन भर जो भी लोग उनको आकर चढ़ा देते थे, पुराने समय में चाँदी के सिक्के हुआ करते थे, तो शाम को जाकर वो सब कुछ नदी में बहा देते थे । बोले रखूँ तो इसकी चिन्ता करनी पड़ेगी । जिसकी जो इच्छा हो, मर्जी हो ले जाये । तो ऐसे हम भी सद्गुरु के पास आते हैं, सद्गुरु जो ज्ञान देते हैं, उस ज्ञान का उद्देश्य यही है

जिस परमात्मा को तुम खोजते हो और सोचते हो कि वो कहीं दूर है, वो परमात्मा तो तुम्हारे पास ही है । उसको खोजने के लिए, अनुभव करने के लिए, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, तुम बस आँख बन्द करके बैठो, अपने अन्तर में जाओ, वो परमात्मा तुमको वहीं प्राप्त होगा ।

कि मनुष्य किस तरह से निश्चिन्त होकर अपना जीवन जिये । अगर हम उनकी बात सुनते हैं, समझते हैं तो उनकी बातों का रहस्य समझेंगे कि वो हमें यही बताते हैं कि अपने अन्तर से सुख और शान्ति का अनुभव हम किस तरह करें । रवि ने आपको बाबाजी के बारे में बताया कि बाबा जी की एक तीव्र इच्छा थी कि मैं अपने आप को जानूँ । मेरे अन्तर में जो परमात्मा की शान्ति है उसको कृपा से जागरित करा के मैं अपने आप को अन्तर्मुखी करूँ । विश्व भर में बारह वर्ष उन्होंने जिस किसी को भी हमारी संस्कृति या गुरु के बारे में नहीं पता उसको उन्होंने गुरु क्या है इस विषय में बताया । अगर हम सोचें कि विदेश में जहाँ भगवान् वो सोचते हैं कि कोई सात आसमान दूर है, गुरु क्या है, इसका ज्ञान है ही नहीं, उन लोगों को जाकर गुरु के बारे में बताना कि जिस परमात्मा को तुम खोजते हो और सोचते हो कि वो कहीं दूर है, वो परमात्मा तो तुम्हारे पास ही है । उसको खोजने के लिए, अनुभव करने के लिए, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, तुम बस आँख बन्द करके बैठो, अपने अन्तर में जाओ, वो परमात्मा तुमको वहीं प्राप्त होगा । हमारे यहाँ तो हम बचपन से ये बात सुनते आते हैं तो हमको तो लगता है, ठीक है, सन्त जो कह रहे हैं हमने सुना है पुनः सुन कर अपने को अच्छा लगता है । परन्तु जहाँ जिस देश में भौतिकवाद की विशेषता है, लोग ये सोचते हैं कि सुख धन से है, सुख बाह्य वस्तु से है । आन्तरिक सुख अन्तर से प्राप्त होगा, ये कभी उनको ज्ञान हुआ ही नहीं । हमारा देश भी आज उसकी ओर बढ़ रहा है, उस मार्ग पर चल रहा है । ये सोच

हमारे सन्त जन पहले से ही हमें कहते आये हैं कि प्रारब्धवश हमें कुछ भी मिल जाता है, परन्तु हम जो वास्तविक सुख चाहते हैं, वह हमको अन्तर से ही प्राप्त होता है ।

रहा है कि सुख मिले तो बाह्य वस्तु से मिले परन्तु आप देखेंगे कि हमारे सन्त जन पहले से ही हमें कहते आये हैं कि प्रारब्धवश हमें कुछ भी मिल जाता है, परन्तु हम जो वास्तविक सुख चाहते हैं, वह हमको अन्तर से ही प्राप्त होता है । बाबाजी एक प्रश्न किया करते थे- कोई भी व्यक्ति दिन भर दौड़ता है, नौकरी के लिए जाता है, खाने के लिए जाता है, सब कुछ करता है परन्तु रात दस, ग्यारह बजे वो आकर अपने बिस्तर पर सो जाता है । उस समय न उसको धन चाहिए, न उसको गाड़ी चाहिए, न उसको कोई बाह्य वस्तु चाहिए, न पत्नी चाहिए, न बच्चा चाहिए, और खाना भी नहीं चाहिए । वो नहीं चाहता कि मैं आँख बन्द करूं और अपने अन्तर में जाऊँ । छः घण्टे तक वो यही सोचता है कि बस मैं यहाँ पड़े रहूँ । और जब सुबह उठता है, तब उससे पूछो कि कैसा लगता है तो कहेगा बहुत अच्छा लगता है, बहुत आराम प्राप्त हुआ, बहुत विश्राम प्राप्त हुआ । तो बाबाजी कहते थे हम सब अपने आपसे ये पूछें कि जब मैं आराम चाहता हूँ, विश्राम चाहता हूँ तो हम जब आँख बन्द करके अन्तर में जाते हैं, हम बाहर कुछ करने नहीं जाते, थके होते हैं, और हम कहते हैं कि मैं सो जाऊँ । तो कहते हैं कि सो क्यों जाते हैं अपने आप से पूछें? मेरे अन्तर में जो प्रभु हैं, जो परमात्मा हैं, मैं उनके पास पहुँचता हूँ , मैं उनके पास जाता हूँ, इसके लिए मुझे आराम मिलता है । और ध्यान जो उनका विशेष विषय है - कि हम ध्यान करें तो ध्यान निद्रावस्था से और आगे है और वो हमको महा आराम या ऐसा आराम देता है जिस आराम से हमको फिर अपनी ही आत्मा का

हमारे यहाँ लोग सुखी थे, मस्त थे, भगवद् भजन करते थे, सत्संग करते थे, ये ज्ञान रखते थे कि सुख मेरे अन्तर में ही है

अनुभव होता है । हमारे यहाँ लोग सुखी थे मस्त थे, भगवद् भजन करते थे, सत्संग करते थे । ये ज्ञान रखते थे कि सुख मेरे अन्तर में ही है, परन्तु आज जब भ्रमण करता हूँ तो देखता हूँ कि सब के पास अच्छे घर, दो गाड़ी तो कम-कम से, टी.वी. भी दो चार हैं । ए.सी. है, परन्तु ए.सी. होते हुए भी आप उनको पूछो कैसे हो, तो कहते हैं कि पति को कोई समझा दे, पत्नी को कोई समझा दे, बच्चों को कोई समझा दे, सास को कोई समझा दे, ससुर जी को कोई समझा दे । हमारी बुद्धि अपने बारे में, समझ के बारे में धीरज के बारे में, ज्ञान के बारे में, क्यों कम हो गयी है? मन्दिर जाते हैं, प्रणाम करके आ जाते हैं । उत्तर भारत में अधिकांश जब लोग प्रणाम करने जाते हैं, खास हमारे पुरुषवर्ग, ऐसे ही हाथ लगाकर चले जाते हैं । हम चाहते हैं कि जो भी हमारे बड़े हैं उनको हम नमन करें, जो भी हमसे बड़ा हो उसका हमको सम्मान करना चाहिए तथा आशीर्वाद लेना चाहिए । हमको ऐसे सम्मान नहीं करना चाहिए जैसे कि रास्ते में किसी से टकरा गये । एक आलसी नें सोचा होगा कि ऐसे ही कर देता हूँ, तो अभी तक ये प्रथा चल रही है कि उल्टे हाथ से उल्टा पैर छू दिया। मैं अनुभव से कहता हूँ क्योंकि ऐसी टक्कर बहुत खाता हूँ । माताएँ कहती हैं कि प्रणाम कर ले बेटा, तो बेटा कहता है कि ठीक है आप कहती हैं तो प्रणाम कर लेता हूँ । हम अपने आप से पूँछें कि मैं चाहता क्या हूँ? मैं क्या जानना चाहता हूँ? जो भी हमारा है, चाहे वो गुरु हों, चाहे हमारे दादाजी हों, पिताजी हों, माताजी हों कोई भी हो हम चाहते क्या हैं उनसे? हम उनसे कुछ

चाहते हैं। समझो कि ये माईक हमें कुछ देना चाहता है, तो हमें हाथ ऐसे रखना पड़ेगा। अगर हम हाथ इधर रखें और कहें कि दे दो तो माईक कहेगा- थोड़ा नीचे आओ, थोड़ा झुको, थोड़ा नमन करो, तब मैं तुम्हें कुछ दूँ। हम तो ऐसा कहते हैं कि मैं खड़ा हूँ, ले मुझे देना है तो दे दो नहीं तो मत दो। तो वो बिचारा सोचता है, मैं इसको दूँ कैसे? अतः झुकाऊँ कैसे? और हम कहते हैं कि मैं बड़ा हूँ, ऐसा हूँ, वैसा हूँ। जब बाबाजी विदेश में पहले-पहले जाते थे तो लोग पूँछते थे कि हम आपको प्रणाम क्यों करें? आप भी हमारी तरह ही एक साधारण पुरुष हो, हमको आप के सामने प्रणाम करने बाद क्या प्राप्त होगा? तो बाबा जी कहते थे जैसी तुम्हारी बुद्धि, जैसा तुम्हारा दर्शन, वैसा ही मैं तुम्हें दिखूँगा। अगर तुम सोचोगे कि ये एक आदमी है, ठीक है, तुम्हें दर्शन आदमी का ही होगा। अगर तुम सोचोगे कि ये एक ज्ञानी पुरुष हैं, वेदान्त, शास्त्र जानते हैं तो तुम्हें थोड़ा ज्ञान प्राप्त होगा। अगर ये सोचेगे कि ये कोई सन्त हैं, इनसे मुझे सब कुछ प्राप्त होगा या मिलेगा, तो तुम्हें सब कुछ मिलेगा। तो अपने यहाँ नम्रता, समर्पण ये सब गुण हैं। इनका अभ्यास करते-करते एक दिन हमारे में बुद्धि जागरित हो जाती है, और तब हम को सुख प्राप्त होता है। गुरु शिष्य की जब हम चर्चा करते हैं, तो बाबाजी एक कहानी कहा करत थे - दिल्ली में एक महान् सूफ़ी सन्त हुए जिनके नाम से आज शहर बसा है, स्टेशन भी है। निजामुद्दीन औलिया पुराने समय में ऐसे बड़े सन्त थे जिनके पास हम क्षण भर भी जायें तो हमें बहुत कुछ प्राप्त होता था। एक दिन एक आदमी आया

अपने यहाँ नम्रता, समर्पण ये सब गुण हैं। इनका अभ्यास करते-करते एक दिन हमारे में बुद्धि जागरित हो जाती है, और तब हम को सुख प्राप्त होता है।

अगर हम समझदार हों तो सन्त के पास तीन दिन क्या है ? खराब थोड़े ही हुआ, कुछ ना कुछ तो मिला ही होगा ।

गरीब आदमी था बोला- मुझे अपनी बेटी की शादी करनी है, आपसे कुछ आशा लेकर आया हूँ । आप कुछ ऐसा आशीर्वाद दो कि मैं अपनी बेटी की शादी अच्छी तरह से करा दूँ । तो सन्त जी ने कहा ठीक है तुम तीन दिन यहाँ बैठो जो कुछ भी चढ़ावा आयेगा वो सब तुम्हारा हो जायेगा । तीन दिनों तक वो वहाँ बैठा रहता है और कहता है कि महाराज यहाँ तो कोई भी भक्त नहीं आया, या चढ़ावा नहीं आया और मेरे तीन दिन खराब हो गये । हालांकि अगर हम समझदार हों तो सन्त के पास तीन दिन क्या है ? खराब थोड़े ही हुआ, कुछ ना कुछ तो मिला ही होगा । महाराज कहते हैं- ठीक है भई मैं और क्या दूं मेरे पास तो कुछ है ही नहीं । ठीक है अपने जूते दे देता हूँ इन्हें बेच कर कुछ खा लेना । तुझे ऐसा न लगे सन्त के पास तीन दिन रहा खाने को भी नहीं मिला । तो वो आदमी जूतों को कपड़े में बाँध कर घर की ओर चल देता है । रास्ते में एक बड़ा सज्जन सेठ मिला जो ऊँठों पर बहुत सा सामान लाद कर ले जा रहा था । उस आदमी ने उनसे कहा कि भई पानी पिला दो, प्यास लगी है । तो सज्जन उसको पानी पिलाते हैं, और देखते हैं कि उसके पास कुछ है। पूँछते हैं ये क्या है तेरे पास ? तो वो अपनी कहानी सुनाता है- कि मैं एक सन्त के पास गया गया था और मेरी इच्छा थी उनसे मुझे कुछ प्राप्त हो जाये, जिससे अपनी बेटी की शादी कर सकूँ । तीन दिन मेरे बीते गये परन्तु कुछ प्राप्त नहीं हुआ । उनके पास कुछ भी नहीं था, उनके पास ये जूते पड़े हुए थे, सो उन्होंने मुझे ये दिये और कहा कि कुछ खा लेना, पेट भर लेना । सज्जन उन महाराज का शिष्य होता है । उस के पास नौ ऊँठ थे । वो कहता है कि ये जूते मुझे दे दो और ये ऊँठ तुम ले लो । तो वो गरीब राजी

हो जाता है और जूते उन्हें देकर ऊँठ लेकर चला जाता है। तब वो सज्जन निजामुद्दीन के पास पहुँचते हैं, और प्रणाम करते हैं तो सन्त वो जूते देख कर पहचान जाते हैं, और पूँछते हैं कि ये जूते कहाँ से आये? तो सज्जन उनको ये वृत्तान्त सुनाते हैं कि वो आदमी जो आपके पास तीन दिन रह के गया उस को इन जूतों की कीमत नहीं पता थी लेकिन मैं जानता हूँ इन जूतों की कीमत। तो बाबा जी हमेशा कहते थे कि हम हमेशा ये स्मरण करें, सोचें, जब भी हम उन चरण पादुकाओं की पूजा करें तो हम समझें कि ये हमारे गुरु साक्षात् हमारे बीच में हैं, और उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ है।

बाबा जी हमेशा कहते थे कि हम हमेशा ये स्मरण करें, सोचें, जब भी हम उन चरण पादुकाओं की पूजा करें तो हम समझें कि ये हमारे गुरु साक्षात् हमारे बीच में हैं, और उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय